धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

दिसम्बर 2007

देवात्मा अंक

- एक नये युग के उत्पन्न कर्त्ता भगवान देवात्मा का अद्वितीय आविर्भाव
- देव जीवन धारी भगवान देवात्मा का दर्शन
- एक मात्र अद्वितीय धार्म शिक्षक भगवान देवात्मा
- भगवान देवात्मा के देव प्रभावों का मनुष्यात्माओं में अनुपम कार्य

शुभ संग्राम

25 अक्तूबर से 29 अक्तूबर तक श्रीमान बलदेव सिंह जी ने डबवाली और केसूपुरा का दौरा किया। डबवाली में मन्दिर की उचित सफाई आदि का प्रबन्ध करके केसूपुरा पहुंचे।

केसूपुरा में 29 तारीख तक रहकर 6 सभाएं करवाई। इन सभाओं के मुख्य विषय वातावरण का प्रभाव, दूसरे धर्मों के लक्ष्य से देव धर्म के लक्ष्य की विभिन्नता, झूठी करामातें और देवात्मा के प्रभावों से उच्च परिवर्तन की सच्ची करामातें, सम्बन्धों में धर्म है, गुरु महाराज द्वारा नीच जीवन को घटाने के लिए निरधारित प्रतिज्ञाओं का महत्त्व आदि विषयों पर सभाएं करवाई गई। उपस्थित जनों ने इन सभाओं से अच्छा लाभ उठाया। आते हुए श्रीमान जी ने मानसा में डा. सुबोध जी के पास रुक कर हितकर बातचीत की।

10 नवम्बर को फिर डबवाली सीता राम जी और जगदीष जी के साथ भजनों का गान वा ईतवार की सभा की गई।

गिद्दड़बहा होते हुए कल्याण में भी सभा की गई।

लखनऊ :- 17 तारीख को श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमान बलबहादुर सिंह जी यहां पहुंचे और देवकी नन्दन जी के घर में 17 - 18 - 19 नवम्बर तक 4 सभाएं करवाई। जिसमें परिवारिक जनों ने काफी लाभ उठाया।

वहां से श्रीमान जी श्री अकबरपुर पहुंचे और पूजनीय भगवान देवात्मा के जन्म स्थान के दर्शन करके अपने श्रद्धा भाव की तृप्ति की।

पृष्ठ 19 का बाकी

63 साल की आयु में गुज़रे। उन्होंने अपने जीवन के 40 वर्ष पूरी वफादारी के साथ भगवान देवात्मा के कार्य में व्यतीत किए। डाक्टर कुमारी प्रेम देवी जी अपनी शादी और अन्य नाना प्रकार की उम्मीदों का त्याग करके भगवान देवात्मा के कार्य में लर्ग गई। और जब तक जीती रहीं, भगवान देवात्मा की महिमा को पूरी वफादारी के साथ फैलाती रही और अधिकारी स्त्री पुरुषों तक उन का महा दान पहुँचाती रहीं। औरों को छोड़कर श्रीमान भाई अमर सिंह जी का दृष्टांत हमारे सामने है, उन्होंने 18साल की उमर में अपना जीवन भगवान देवात्मा के चरणों में अर्पण किया था, आप यह 77 साल से ऊपर की उमर में हमारे सौभाग्य, वशत: हमारे सिरों पर विराजमान रहे हैं। प्राय: 60 वर्ष से वह भगवान देवात्मा का कार्य कर करते रहे हैं।

अब यह नाना प्रकार के सुन्दर फल जो भगवान देवात्मा के देव प्रभाव उत्पन्न कर रहे हैं, उन को हम स्मरण करें। और जहां एक ओर पाए हुए उपकारों के लिए आप धन्य-धन्य हों, वहां दूसरी तरफ औरों तक इस शुभ सम्वाद को पहुंचा कर उन का आत्मिक कल्याण करने के योग्य हों।

पी. वी. कनल

धर्म जीवन

खण्ड 19 अंक 12
दिसम्बर 2007
वार्षिक मूल्य 50 रुपये
देवात्मा अंक

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

एक नए युग के उत्पन्न कर्त्ता भगवान् देवात्मा का अद्वितीय आविर्भाव

1. मनुष्य जगत की असभ्य अवस्था

नेचर के विकास क्रम में मनुष्य का प्रकाश पशु जगत् से ही हुआ है। यद्यपि मनुष्य विकास क्रम में अपनी विशेष शारीरिक गठन और उन्नतशील बुद्धि और वाक शाक्ति को प्राप्त होकर पशु जगत से भिन्न और एक नई श्रेणी का जीव उत्पन्न हुआ है, और उस की इस विशेषता के कारण पशु और मनुष्य में मूल अन्तर उत्पन्न हो गया है। परन्तु मनुष्य के धीरे-धीरे अपनी उक्त विशेषताओं में उन्नत होकर इस पृथ्वी पर जो 2 आश्चर्य जनक लीला प्रगट की है, जो 2 करिश्मे दिखाए, और जिस प्रकार का सुन्दर और हितकर रूप भौतिक जगत्, उद्भिद् जगत्, पशु जगत् और मनुष्य जगत् को दिया है, और उनके लिए जिस-जिस प्रकार के सुखों और अन्य कीमती बरकतों का द्वार खोल दिया है, वह पशु जगत् के किसी बड़े से बड़े जीवधारी के स्वप्न में भी नहीं आ सकता था और न आ सकता है। हां, पशु जगत का कोई जीवधारी अपनी तुलना में मनुष्य की इन विशेष शक्तियों और उनकी विचित्र लीला को भी देखने के पूर्णातः अयोग्य है, परन्तु यह भी सच है, कि मनुष्य एक लम्बे काल तक बहुत कुछ असभ्य अथवा जङ्गली अवस्था में रहा है इसके विषय में पूजनीय देव शास्त्र खगड 3 पृष्ट 544 में इस प्रकार लिखा है :-

"एक बड़े लम्बे काल तक मनुष्य इतना जंगली था, कि वह नर नारी के सम्बन्ध में भी परस्पर के जोड़े के बन्धन से भी नहीं बन्धा था। फिर जब उस में नर नारी विषयक कई प्रकार के सुखों का आकर्षण बढ़ा और उस ने धीरे-धीरे पारिवारिक जीवन ग्रहण किया, और अन्य बातों के भिन्न सन्तान पालन के सम्बन्ध में भी उस की सोच विचार आदि मानसिक शक्तियों पर अधिक बोझा पड़ा, तब उस की कुछ और उन्नति हुई। इसी प्रकार उस के एक वा दूसरे प्रकार के दुख ने भी उस की कई प्रकार की शक्तियों को कुछ-कुछ हिलाने और धीरे-धीरे उन की उन्नति में कुछ न कुछ सहायता की।. . . .. हज़ारों वर्षों तक मनुष्य न आग जलाना जानता था, न कोई कपड़ा बनाना जानता था, न कोई कपड़ा पहनता था, न

किसी धातु को ज़मीन से निकालना और उसकी कोई वस्तु बनाना चाहता था, न वह कोई गांव वा नगर रखता था, न कोई दुकान करता था, न कोई और व्यवसाय करता था, और न लिखना पढ़ना जानता था, किन्तु प्राय: बहुत से जंगली पशुओं की न्याई अपना जीवन रखता था।"

यह मनुष्य की आरम्भ की असभ्य अथवा जंगली अवस्था का प्रमाण है।

2. मनुष्य में सुख अनुरागों का बढ़ना और उस का अपने साथी मनुष्यों आदि पर अन्याय और अत्याचार करना

मनुष्य ने अपनी जीवन यात्रा करते हुए ज्यों-ज्यों अपने एक वा दूसरे सुख कर भाव की तृप्ति करने का यत्न करना शुरू किया, त्यों-त्यों उस के भीतर उन सुखों को बार-बार लाभ करने की लालसा भी बढ़ती गई। इस से जहां उस की सोच विचार आदि मानसिक शक्तियों की उन्नति का अपेक्षाकृत अधिक पथ खुला। वहां उस की नाना सुख लालसाएं भी बढ़ने लगी, और धीरे-धीरे नाना प्रकार के सुख अनुरागों के रूप में परिणित हो गई। इन सुख अनुरागों के परिचालन से बेशक उसकी कई प्रकार की उन्नति भी हुई, लेकिन वह अपनी कई एक सुखों की लालसाओं के बढ़ने से धीरे-धीरे नीच भी बनता गया, और एक-एक सुख के पीछे इस कदर पागल हो गया, कि वह अपने नाना कर्मों के विचार से पशुओं की तुलना में भी अत्यन्त नीच बन गया।

मनुष्य को ऐसी अन्धता और अबोधता की अवस्था में न अपने नफ़े और नुकसान का विवेक और बोध था, और यदि किसी विषय का विवेक भी था तो नीच सुखों के दासत्व के कारण अपहरणकारी गतियां करने के लिए लाचार था। ऐसी सूरत में एक ओर भीतर की प्रबल सुख अनुराग मूलक शक्तियों से उसका नाना सम्बन्धों में मिथ्या और अशुभ की गतियाँ करना जरूरी था, और दूसरी ओर अपने और दूसरों के सम्बन्ध में अपहरणकारी बनना भी अनिवार्य था। इन नीच सुख अनुरागों के दास और उच्च भावों से वंचित मनुष्य ने अपनी अपहरणकारी गतियों से अपने साथी मनुष्यों और अन्य अस्तित्वों पर क्या कुछ अन्याय और अत्याचार करना शुरू किया, उस के विषय में उक्त अद्वितीय ग्रंथ के पृथ्ठ 546 पर इस प्रकार लिखा है :-

"पशु जगत् के प्रति कई प्रकार के अत्याचारों को छोड़कर मनुष्य के द्वारा उस के अपने जगत् के सम्बन्ध में जितना अत्याचार हुआ है, हत्याएं हुई हैं, जितना अपहरण हुआ है, निर्बल स्त्रियों पर अन्याय हुआ है, सबल पुरुषों ने निर्बल पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों को बलात् पकड़ 2 कर उन्हें दास वा गुलाम बनाया है, उन्हें पशुओं की न्याई औरों के हाथों में बेचा और इस गुलामी का व्यवसाय करके धन कमाया है; नाना प्रकार के मिथ्या और महा हानिकारक धर्म मतों का प्रचार किया हैं, और झूठे धर्म मतों का विश्वासी बन जाने पर नाना देशों के लोगों ने अपने जैसा धर्म मत न रखने वालों को जिस-जिस प्रकार से उत्पीड़ित किया है, उन्हें जीता हुआ अग्नि में डालकर जलाया है, उन्हें अन्य नाना विधियों से सताया और तड़पाया है, उन की हत्याएं की हैं, एक वा दूसरे प्रकार के कहलाने वाले देवतों परन्तु वास्तव में प्रेत आत्माओं के चाहने पर उन के आगे पशुओं के भिन्न मनुष्यों के भी गले काट कर उन के रुधिर की उन्हें बलियां दी हैं. एक वा दूसरे कहलाने वाले देवताओं के आदेश मानकर अपने से भिन्न सम्प्रदायों के अनुयाईयों के साथ अन्याय-मूलक युद्ध किया है, ऐसे युद्धों में

एक ओर के जनों ने दूसरी ओर के जनों पर जय लाभ करने पर उनके गावों को लूटा है, उन्हें आग लगाकर फूंका है, उनकी स्त्रियों और बच्चों को दास बनाने के भिन्न सती स्त्रियों के सतीत्व को नष्ट किया है, पतियों के मर जाने पर विधवा स्त्रियों का माल ले लेने के निमित्त उन में यह मिथ्या विश्वास उत्पन्न करके, कि जो विधवा अपने मरे हुए पति के साथ चिता में बैठकर आप भी जल जाती है, न केवल वह स्वर्ग को जाती है, किन्तु अपने पति को भी स्वर्ग में ले जाती है, उन के पतियों के मृत देह के साथ उन की पत्नियों को भी अग्नि में दग्ध किया है; स्त्रियों और अन्य हज़ारों जनों को घटिया बताकर उन्हें उन की मानसिक उन्नति से वंचित किया है, पुरुषों ने विधवाओं को उचित रूप से पुनर्विवाह करने से रोका और बन्ध किया है, और अपने काम सुखादि की प्राप्ति के निमित अपने लिए बहुत से विवाहों की प्रथा जारी की है; घमंड और घृणा भाव से परिचालित होकर लाखों और करोड़ों जनों को प्रकारण अपनी अपेक्षा घटिया कहकर उन्हें अस्पर्श्य अथवा अछूत बताया और उनके प्रति कई प्रकार का अत्याचार किया है; परस्पर के सम्बन्ध में कई प्रकार के पूर्णातः मिथ्या भेदों का प्रचार किया है, धन, सम्पति, पद और राज्य के लालच का दास बन जाने पर उन की प्राप्ति के लिए नाना प्रकार के अत्याचारों का पथ ग्रहण किया है: राज्य पाने पर अपनी-अपनी पतित प्रकृति के अनुसार महा भयानक दण्ड विधियों नियत की हैं; अपने आहार और अन्य सुखों की प्राप्ति के लिए पशु जगत् के नाना प्रकार के जीवों की हत्या विशेष वा उचित बताई है, और इसी प्रकार के अन्य महा अत्याचार-मूलक कर्मों का प्रचार किया है, उन का मनुष्य जगत् के लिखे हुए इतिहास से भी प्रमाण मिलता है।"

ओह! मनुष्य के नीच सुख अनुरागों और नीच घृणाओं की गुलामी की कैसी अत्यन्त शोचनीय, अन्धकार मय, भयंकर और कितनी महा राक्षसी छवि!

3. मनुष्य सभ्यता में उन्नत होकर भी सुख परायण ही बनता गया

मनुष्य जगत के क्रमशः परिवर्तन से जब कितने ही मनुष्यों ने यह जाना, कि नेचर ही उन के कई प्रकार के सुखों का भंडार है, उसके नाना पदार्थों और नाना शक्तियों में उन के सुखों की सामग्री है, और उनके विषय में लाभ करने की आकांक्षा उन में जाग्रत हुई और धीरे-धीरे बढ़ी, तब कई देशों के मनुष्यों ने कल्पना मूलक विधियों से ठीक काम निकलता न देखकर उन्हें धीरे-धीरे त्याग कर दिया, और नेचर के विषय में ठीक ज्ञान लाभ करने के लिए ठीक विधि मालूम और ग्रहण की, इस से मनुष्यों के लिए एक बिल्कुल नए वैज्ञानिक ज्ञान की उन्नति का पथ खुल गया और इस के द्वारा विविध प्रकार के नए सुखों का एक नया युग शुरू हुआ।

इस से मनुष्य ने नेचर के नाना पदार्थों और शक्तियों को अपने अधिकार में लाकर अपने लिए नए-नए सुखों को प्राप्त किया, जो पहले मनुष्य जगत् के लोगों को कभी प्राप्त न थे। इसी क्रम में मनुष्य ने मशीनरी वा कला कौशल की उत्पत्ति करके जहां अपने सुख अनुरागों को बढ़ाया, वहां उस ने शिल्प और वाणिज्य विषयक कार्य में भी बहुत उन्नति लाभ की और विविध अङ्गों में अपने साथी मनुष्यों के कुछ अधिकारों को स्वीकार किया, जिन्हें वह पहले स्वीकार नहीं करता था, और परस्पर की लड़ाइयों और अपराध विषयक दण्ड

विधियों में भी बेहतर परिवर्तन उत्पन्न हुआ, और पहली अत्याचार-मूलक विधियां दूर हुई। इस से परस्पर के सम्बन्धों में कई प्रकार की शान्ति और उन्नति का मार्ग भी कुछ और खुला। और मनुष्य पहले की अपेक्षा अधिक सुसभ्य हुआ, मनुष्यों ने सुख दुख के आधार पर सभ्यता उत्पादक जिस-जिस विषय में जितना-जितना उच्च परिवर्तन लाभ किया, वह नेचर के विकासकारी कार्य की निश्चय एक विचित्र और मनोहर छवि है, परन्तु मनुष्य जगत के इस प्रकार सुसभ्य बनते जाने पर भी उस की सुख परायण मूल प्रकृति में कोई अन्तर नहीं आया। यह 'मौज बहार' के जीवन का प्रेमी होता गया। उस की नाना सुखों के सम्भोग करने की लिप्सा दिनों दिन बढ़ती गई। अर्थात् वह दिनों दिन धन सम्पति, अपनी सन्तान, अपने खान पान, अपने मान, अपनी बड़ाई, निर्बलों पर अपने आधिपत्य, राज्य और पद और भोग विलास और उनके देने वाले सामानों और सम्बन्धियों का दास भी अधिक बन गया। और इन नीच अनुरागों के बढ़ते जाने से मनुष्यों के आत्मा दिनों दिन घोर आत्म अन्धकार ग्रस्त, कठोर, उल्टा दृष्टा, अनुचित दुखों के भागी और विनाश पथ गामी बनते गए। एक ओर वह अपनी इस अत्यन्त असहाय और मदद की मुहताज आत्मिक अवस्था का कोई ज्ञान वा बोध नहीं रखते थे, इसलिए उस से मोक्ष पाने और आत्मिक उच्च बोध लाभ करने की कोई आकांक्षा नहीं करते थे, और दूसरी ओर धर्म के नाम से जिस-जिस प्रकार के मिथ्या साधन, वा पूजा, पाठ, जप तप वा संध्या आदि करते थे, जिन मिथ्या देवी देवतों वा उपास्यों के पुजारी बने हुए थे, और जिस मिथ्या लक्ष्य की पूर्ति के लिए वह सब कुछ करते थे, उस से आत्मिक जगत के अटल नियमानुसार सिर्फ यही नहीं कि वह अपने आत्मा के रूप और उसके जीवन के विषय में कोई सत्य ज्ञान और बोध न पाते थे, और बिना देव ज्योति की प्राप्ति के पा भी नहीं सकते थे। किन्तु पहले से भी अधिक अन्धकार ग्रस्त, कठोर और अयोग्य वा अनअधिकारी बनते जाने के लिए मजबूर थे। ऐसी महा शोचनीय और अत्यन्त असहाय दशा में मानों कुल जगतों की ओर से ही यह पुकार उठ रही थी, कि कोई हमारा परम रक्षक और नेता, परम विकासक वा सर्व्व हित सम्पादक उत्पन्न हो, और वह हमारी सुध ले और हमें अज्ञान, मोह, पाप, दुख और अशान्ति से निकाल कर सत्य ज्ञान वा उच्च बोध और सच्चा सुख वा शान्ति प्रदान करे।

4. आत्मिक जगत् के सूर्य भगवान देवात्मा का आविर्भाव

नेचर के विकास क्रम में जैसे और जगतों में धीरे-धीरे हितकर से हितकर परिवर्तन आता और विकास होता गया है, वैसे ही उसी अटल नियम के अनुसार ठीक समय के आने पर मनुष्य जगत में से सब प्रकार की मिथ्या और अशुभ को नष्ट करने और सब प्रकार के सत्य और शुभ का राज अथवा देव राज स्थापन करने के लिए **आत्मिक जगत के सूर्य भगवान देवात्मा का आविर्भाव हुआ है।** इस अद्वितीय और पूर्णातः अनोखे आविर्भाव के विषय में पूजनीय देव शास्त्र के खगड् 3 पृष्ठ 563 पर इस प्रकार ब्यान किया गया है :-

"मनुष्य जगत की इस नितान्त अन्धकार ग्रस्त, महा अबोधी, महा पतित और महा हानिकारक दशा में उच्च परिवर्तन लाने और उस में एक पूर्णातः नए और शुभ युग की उत्पत्ति करने के लिए उसी मनुष्य जगत् से ही, परन्तु उस से ऊपर जिन सच्ची

और अद्वितीय देव शक्तियों से विशिष्ट देवात्मा के आविर्भाव की आवश्यकता थी, उन सच्ची और अद्वितीय देव शक्तियों से विभूषित देवात्मा का आविर्भाव हुआ, और उनके इस आविर्भाव से मनुष्य जगत् के विकास में उस पूर्णता: नए युग का आरम्भ हुआ, कि जिस का उत्पन्न होना नेचर के विकास क्रम में आवश्यक था।"

निश्चय इस अद्वितीय और पूर्णता: अनोखे आविर्भाव के होने पर

1) मिथ्या उपास्यों के स्थान में मनुष्य मात्र को एक मात्र सत्य उपास्य वा देवात्मा गुरु प्राप्त हुए,

2) पहले जो आत्मिक जगत् में अन्धकार की काली घटा छाई हुई थी, उस के स्थान में सत्य ज्योति का प्रकाश हुआ,

3) आत्मा और सत्य धर्म के सम्बन्ध में जो नाना प्रकार के मिथ्या विश्वास और मत फैले हुए थे, उस के स्थान में नेचर सम्मत विज्ञान मूलक सत्य धर्म और उस के तत्वों और साधनों की अद्वितीय शिक्षा मिली; जिस से मज़हबी दुनिया का सारा तख़्ता पलट गया,

4) परस्पर के सम्बन्धों में से अनुचित दुख और हानिकारक अन्मेल के दूर होने और हितकर सुख और हितकर मेल के आने की अनोखी साधन प्रणाली प्रचलित हुई और सर्वाहित का कार्य आरम्भ हो गया।

नवयुग प्रवर्तक देवात्मा

जगत् आरम्भ से अब तक, गुरु होते ही आए हैं;
वली अवतार पैग़म्बर, नबी हादी कहाए हैं।
रहे उपदेश देते वह, जो दिल में आ गया उनके;
हकीकत छोड़दी, कल्पित खुदा के गीत गाए हैं।
नहीं स्वभाव से इन्सां, बदी पर इस क़दर मायल;
कि जितने झूठे मज़हबों ने, वह तरफ इसकी झुकाए हैं।
जरूरत थी कि इन मज़हबों के, कोई जाल को तोड़े;
जिन्होंने नाहक खून के, कई दरिया बहाए हैं।
हुए तब देवगुरु उत्पन्न, भारत वर्ष के भीतर;
जिन्हों ने पाप और पांखड, मज़हबों के उड़ाए हैं।
उन्होंने सत्य धर्म खोज, जो सांईस के मुताबिक है;
उन्होंने तत्व रूहानी, नए बिल्कुल बताए हैं।
नई दुनिया बसाई है, नई लीला दिखाई है;
न देखे थे कभी पहले, करिश्मे वह दिखाए हैं।
उन्हीं की शरण में आकर, अनोखे लाभ पा-पा कर.
तराने ईश्वरसिंह ने, गुरु महिमा के गाए हैं।

देव जीवन धारी भगवान देवात्मा का दर्शन

प्र0. देव जीवन से आप की क्या मुराद है?

उ0. पूर्णाङ्ग देव शक्तियों के विकसित होने से भगवान देवात्मा में जिस परम श्रेष्ट और परम सुन्दर और सर्व कल्याणकारी देव जीवन की उत्पत्ति हुई है, उसे हम देव जीवन कहते हैं।

प्र0. देव शक्तियों से आप का क्या अभिप्राय है?

उ0. सत्य और हित विषयक पूर्णाङ्ग अनुराग शक्तियों और अहित और असत्य विषयक पूर्णाङ्ग घृणा शक्तियां ही देव शाक्तियां हैं।

प्र0. सत्य विषयक पूर्णाङ्ग अनुराग शक्तियों से आप की क्या मुराद है?

उ0. सत्य विषयक पूर्णाङ्ग अनुराग शक्तियां वह अनोखी शक्तियां हैं, कि जिन के प्रबल रूप से प्रस्फुटित और विकसित होने से भगवान देवात्मा ने उस विचित्र लीला का प्रकाश किया है, जिस को देख और उपलब्ध करके हमारा हृदय उनके पवित्र श्री चरणों में दीनता पूर्वक झुक जाता है। इन शक्तियों को प्राप्त होकर विश्व के नाना विभागों में हितकर ज्ञान का जो असीम भण्डार भरा हुआ है, उस के साथ जुड़कर जो कुछ सत्य हो, उस के जानने, देखने, ढूंढने और ग्रहण करने की गाढ़ कामना भगवान् देवात्मा के भीतर पैदा हुई, और वह दिनों दिन इस योग्य होते गए, कि उस की उच्च ज्योति से दिनों दिन अधिक से अधिक ज्योतिर्मान हों और इस अनोखी जीवन पथ दर्शक ज्योति को चारों तरफ फैलाकर सत्य का राज्य स्थापन करें।

प्र0. क्या मनुष्यात्माओं के भीतर सत्य के जानने, देखने, ढूंढने और ग्रहण करने की गाढ़ कामना नहीं है?

उ0. नहीं बिल्कुल नहीं! साधारणत: मनुष्य तो ऐसी शक्तियों के प्रबल अधिकार में है, और वह अपनी प्रकृति से ही लाचार है, कि वह असत्य की तरफ जावे, असत्य को चाहे और असत्य को ग्रहण करे। यही कारण है, कि प्रत्येक देश और प्रत्येक नगर और प्रत्येक गांओं में असत्य अनुराग के कारण मिथ्या का राज्य फैला हुआ है। आप समझदार हैं, इतना तो आप को भी पता है, कि बिना कारण के कोई घटना वा क्रिया उत्पन्न नहीं होती और नहीं हो सकती। मिथ्या का राज्य तो इसलिए फैला हुआ है, कि मनुष्यात्मा मिथ्या के अनुरागी हैं। वह जान बूझ कर झूठ बोलते हैं, झूठ को व्यवहार में लाते हैं, झूठ फैलाते हैं, और झूठ का मंडल पैदा करके अपना जीवन व्यतीत करते हैं। हमें इस सच्चाई का बार-बार दर्शन करना चाहिए, कि मनुष्यात्मा अपनी नीच प्रकृति के कारण सत्य के आकांक्षी ही नहीं हो सकते। जब सत्य की आकांक्षा ही नहीं, तब उन के लिए सत्य की प्रेमी बनना असम्भव है।

प्र0. क्या झूठ उन को बुरा मालूम नहीं होता?

उ0. जी नहीं, वह तो असत्य के ग्रहण करने से अपने नाना सम्बन्धों में कितनी प्रकार का लाभ और कई प्रकार का सुख मिलता हुआ मालूम करते हैं, ऐसी अवस्था में उन को असत्य की महिमा नज़र आती है। इस के भिन्न कई अवसरों पर असत्य या झूठ की उन को आवश्यकता प्रतीत होती है। यह आवश्यकता मनुष्यात्मा को न केवल अपने निज

के लिए अनुभव होती है, बल्कि अपनी सोसाइटी और समाज के लिए भी। यह कहना मिथ्या न होगा, कि असत्य और झूठ ने मनुष्य मात्र पर ही अपना मोहनी मन्त्र डाल कर उसे अपना अनुगत बना लिया है।

प्र0. क्या झूठ का प्रेमी बनकर मनुष्यों ने धर्म के नाम से भी असत्य का प्रचार किया है?

उ0. जी हां, न केवल प्रचार किया हैं, बल्कि बहुत बड़ा प्रचार किया है। धर्म के नाम से मनुष्य ने नाना प्रकार की झूठी गप्पों और मिथ्या कल्पनाओं को फैलाया है, नाना प्रकार की मनोकामनाओं के पूर्ण कर्त्ता, देवी और देवताओं, संतों व साधुओं, बलियों वा पीरों और उन की करामातों आदि की उत्पत्ति की है। स्वर्ग और नर्क सम्बन्धी नाना प्रकार की रोचक और भयानक, परन्तु झूठी गप्पें घड़ी हैं, वह सब गप्पें पुस्तकों में लिखी गई हैं, और वह पुस्तकें धर्म पुस्तकें कहलाती हैं।

प्र0. क्या आप की यह मुराद है कि कहलाने वाली धर्म पुस्तकें गप्पों से भरी हुई?

उ0. जी हां, न केवल गप्पों से भरी हुई हैं बल्कि महा हानिकारक शिक्षा से भरी हुई हैं। वह इस योग्य ही नहीं हैं, कि उन को धर्म पुस्तक कहा जाए। इन्हीं पुस्तकों में विश्व की उत्पत्ति आदि के सम्बन्ध में ऐसी बेहूदा गप्पें भरी हुई हैं, कि जिन को सुनकर और पढ़कर यह हैरानी आती है, कि अब तक भी और इस सुसभ्य काल में भी ऐसे अन्ध विश्वासी जन वर्तमान हैं, कि जो ऐसी गप्पों को प्रति दिन रटते रहते हैं।

प्र0. हकीकत तो यह है, इस सुसभ्य काल में भी करोड़ों मनुष्य ऐसी मिथ्या गप्पों से भरी हुई पुस्कतों को सत्य ज्ञान का भण्डार समझ कर उन को रटते रहते हैं, जब कि सैकड़ों और हज़ारों विज्ञान की ऐसी पुस्तकें लिखी गई हैं, कि जिन के अध्ययन करने से यह सारा अन्धेरा मिट सकता है। फिर भी न केवल यह, कि यह सारा अन्धेरा मिटता नहीं, किन्तु इस अन्धकार को बढ़ाने और गहरा करने के लिए दलीलें दी जाती हैं, यह क्यों है?

उ0. इस का मूल कारण यह है, कि साधारण मनुष्यों में मानसिक शक्तियां बहुत हीन अवस्था में हैं, उन में विचार की शक्ति बहुत हीन अवस्था में है, उन में आलोचना की शक्ति बहुत हीन हालत में है, उन में तर्क शक्ति बहुत हीन अवस्था में है। इसके विपरीत उन में कल्पना शक्ति का बहुत बड़ा राज्य है, उन में अन्ध विश्वास शक्ति का भी बहुत बड़ा अधिकार है, इस का जरूरी फल यह हुआ है, कि धर्म विषयक बातों में विचार शक्ति का पूर्णात: त्याग किया गया है, और अन्ध विश्वास की महिमा गाई गई है, और अन्ध विश्वास के मुकाबिल में युक्ति वा तर्क शक्ति का प्रयोग अनुचित समझा गया है, और आज भी धर्म विषयक बातों में इस अन्ध विश्वास को ही धर्म का मूल मंत्र समझा गया है, और इसलिए चारों तरफ से धर्म के नाम से विश्वास, हां, केवल विश्वास पूर्णता: अन्ध विश्वास की पुकार उठ रही है।

प्र0. तब क्या आप की यह मुराद है, कि मनुष्य जगत् में प्रचलित धर्म मतों की बुनियाद यह अन्धविश्वास ही रहा है?

उ0. जी हां!

प्र0. वह क्यों?

उ0. वह इसलिए, कि यह महा हानिकारक अन्ध विश्वास कल्पना अथवा असत्य का साथी है। जहां कल्पना का राज्य है और जहां मनुष्यों पर

असत्य का ही अधिकार है, वहां अन्ध विश्वास का ही बोल बाला है।

प्र0. इस अन्ध विश्वास से क्या-क्या फल पैदा होते हैं?

उ0. स्वाभाविक फल जो अन्ध विश्वास से पैदा होते हैं, वह यह हैं। अन्ध विश्वास की प्रबल शक्ति के अधीन मनुष्य ऐसे किसी साक्षात् से साक्षात् असत्य के त्याग और सत्य के ग्रहण करने के भी आकांक्षी और योग्य नहीं रहते, कि जिसे वह इस पृथ्वी में परीक्षा के द्वारा देख और जान सकते हैं। यह कुसंस्कार और कल्पना ग्रस्त लोग परीक्षा के नाम से ही डरते हैं। वह इस महा हितकर नियम की महिमा नहीं देखते और न परीक्षा की अपील को ही सुनते हैं। अन्ध विश्वासी जन हर समय डरते रहते हैं, कि कहीं परीक्षा की कसौटी पर रखने से वह अपने अन्ध विश्वास को ही न खो बैठें।

प्र0. तो फिर वह चाहते क्या हैं?

उ0. वह विश्वास और केवल अन्ध विश्वास ही चाहते हैं, न कि सत्य। सत्य की महिमा उन से पूर्ण रूप से छिपी हुई है। जिस प्रकार वह पाप जीवन में सुख मालूम करते हैं। ठगियां करके खुश होते हैं, रिश्वतें लेकर गद-गद होते हैं, पर स्त्री भोग कर सुख अनुभव करते हैं, आदि-आदि ठीक इसी प्रकार वह अन्ध विश्वास में सुख अनुभव करते हैं। अन्ध विश्वास रखना और उस का प्रचार करना वह अपने और सोसाइटी के लिए कई प्रकार से लाभदायक समझते हैं, अर्थात् धर्म को भीतर से ढकोसला मानकर भी, कई जन बाहर से उसका स्वांग भरना, जान बूझकर उसका इकरार करना और प्रचार करना आवश्यक समझते हैं, और इस प्रकार के कपटता-मूलक अमल करके सुख और तृप्ति लाभ करते हैं।

प्र0. इस प्रकार की अवस्था रखने वाले जन सत्य के तो इच्छुक ही नहीं हो सकते?

उ0. जी हां, ऐसे जन जब सत्य के आकांक्षी ही नहीं, तब वह सत्य के अनुरागी कहां से हो सकते हैं? ऐसे जनों के लिए ही यह कहा जाता है, कि उनकी हृदय भूमि से सत्य का अनुराग उसी प्रकार प्रस्फुटित नहीं हो सकता, जिस प्रकार मुर्गी के अंडे से कभी मनुष्य का बच्चा नहीं निकल सकता।

प्र0. जब मनुष्य मात्र की हृदय भूमि असत्य प्रिय है, तब इस भूमि के लिए कहां सम्भव था, कि उस से सत्य धर्म का प्रकाश हो?

उ0. ऐसी असत्य परायण भूमि से सत्य धर्म का प्रकाश उसी प्रकार असम्भव था, जिस प्रकार कीकर के वृक्ष से सेब उत्पन्न नहीं हो सकते। यही कारण है, कि जहां सत्य धर्म का बिल्कुल प्रकाश ही नहीं हुआ, वहां उस के मुकाबिल में मिथ्या मतों की खूब भरमार हो गई। और मिथ्या मज़हबों की भरमार होने से असत्य परायण जनों ने अपना पहले से भी अधिक बुरा हाल कर लिया। मज़हब के नाम से जिन असत्यों के वह मानने वाले हो गए। उन्हीं असत्यों या झूठी गप्पों के वह प्रेमक भी बन गए। जिन का फल यह हुआ है, कि करोड़ों मनुष्य इस योग्य ही न रहें, कि देव जीवन धारी भगवान देवात्मा की उस देव ज्योति को ही पा सकें, कि जिस ज्योति के आने से मिथ्या मज़हबों का सारा पोल खुल जाता है, और सत्य धर्म का दर्शन होता है।

प्र0. जब मनुष्य मात्र का यह बुरा हाल है, कि एक तरफ तो वह सारे का सारा ही मिथ्या और झूठ की मोहनी सूरत का प्रेमी बना हुआ है, और मिथ्या

में ही लाभ मालूम करता है, और मिथ्या में ही सुख अनुभव करता है, और दूसरी तरफ अपने ही पैदा किए हुए मिथ्या मज़हब के जाल में फंसा हुआ है, तब उस के उद्धार का क्या उपाय हो सकता है?

उ0. ऐसे मनुष्य मात्र के उद्धार का एक ही उपाय है, कि यह पूर्णाङ्ग सत्य अनुरागी देवात्मा गुरु की शरण ले, और उन की ज्योति से ज्योतिर्मान हो, और आत्मिक अन्धकार से निकले; मिथ्या मज़हबों के जाल को तोड़े और सत्य धर्म का दर्शन करे।

प्र0. क्या मनुष्य मात्र का उद्धार किसी और विधि से नहीं हो सकता?

उ0. जी नहीं, कदापि नहीं। पूर्णाङ्ग सत्य अनुरागी के आविर्भाव के बिना असत्य अनुरागियों की आत्मा के विषय में असत्य से कभी भी मोक्ष नहीं हो सकती। असत्य के सम्बन्ध में जो उन के हृदय में प्रेम की गांठें बन्धी हुई हैं, वह किसी और प्रकार से कट हीं नहीं सकती। पूर्णाङ्ग सत्य अनुरागी की देव ज्योति और देव तेज (दोनों) न केवल मिथ्या के बादलों को छिन भिन्न करने की सामर्थ्य रखते हैं, किन्तु मिथ्या की मोटी ज़जीरों को भी काट देते हैं।

प्र0. तब क्या इस मिथ्या ग्रस्त संसार में जहां करोड़ों मनुष्य अपने जीवन के सम्बन्ध में घोर अन्धकार में पड़े हुए हैं, और ऐसे अन्धकार में पड़कर विनष्ट हो रहे हैं, परन्तु फिर भी अपने विनाश का बोध नहीं रखते, वहां मनुष्य जगत् के विकास के क्रम में किसी अनुकूल समय में ऐसे आत्मा का प्रगट होना अत्यन्त आवश्यक नहीं कि जो इस महा भयानक अन्धकार का बोधी होकर उस में किसी प्रकार रहना न चाहता हो; जिस के अनोखे हृदय से यह गूंज निकलती हो, कि जो कुछ सत्य नहीं है, उस के अवलम्बन से किसी जन का भी कोई कल्याण नहीं हो सकता, जो ऐसे सत्य की ज्योति की उसी तरह आवश्यकता बोध करता हो, जिस प्रकार किसी शरीर की रक्षा के लिए हवा की, जो अपने प्रत्येक सम्बन्ध में सत्य का अनुरागी हो और सत्य की जीवन वद्धक ज्योति को पाकर ही परम सुख अनुभव करता हो?

उ0. हां ज़रूरी है, और ऐसा अद्वितीय आविर्भाव मनुष्य जगत् के विकास क्रम में प्रगट भी हो चुका है। उन्होंने अपने जीवन की हज़ारों घटनाओं से यह सिद्ध किया है, कि सत्य केवल मुख से प्रशंसा करने की चीज़ नहीं, बल्कि अपने जीवन के हर एक अङ्ग में अवलम्बन करने की चीज़ है। और जिन्होंने इस सत्य ज्योति में रहना, इस सत्य ज्योति को अधिक लाभ करना और इसी अद्वितीय ज्योति को संसार के हित के लिए फैलाना अपना परम लक्ष्य अनुभव किया है, और जिस ज्योति में अधिक से अधिक बढ़ने और उस के औरों में फैलाने के मार्ग में सब प्रकार का त्याग और सब प्रकार का समर्पण किया है अर्थात् धन का त्याग किया है, सम्बन्धियों का त्याग किया है, नाम का त्याग किया है, घर और बच्चों का त्याग किया है, बिरादरी और समाज का त्याग किया है, आदि। क्या ऐसा आविर्भाव इस पृथ्वी के लिए गौरव की वस्तु नहीं? क्या ऐसा आविर्भाव मनुष्य जगत के लिए अमूल्य रत्न नहीं? अवश्य है। काश! जन्म से ही असत्य परायण प्रकृति रखने वाला मनुष्य मात्र अपने परम कल्याण के लिए ऐसे मूल सम्बन्धी, परम मोक्ष दाता और परम विकासकर्त्ता को उन के पूजनीय रूप में देख और अनुभव कर सके और उन की पूजा और भक्ति से अपना परम कल्याण साधन कर सके।

पी. वी. कनल

एक मात्र अद्वितीय धर्म शिक्षक भगवान देवात्मा

मनुष्य जगत के विकास क्रम में प्रगट और विकसित होकर भगवान देवात्मा ने देव शक्तियों से विभूषित पूर्णाङ्ग देवरूप लाभ किया है। इस अति महान, अति सुन्दर और सर्व हित सम्पादक देवरूप के विचार से वह जहां आत्मिक जगत् के देव सूर्य हैं, वहां कुल मनुष्य जगत के शिरोमणि और एक मात्र अद्वितीय धर्म शिक्षक भी हैं। उन्होंने ही अपनी विलक्षण देव ज्योति में एक ओर नाना प्रकार के मिथ्या मतों को मिथ्या गप्पों पर स्थापित देखा और प्रगट किया है, और दूसरी ओर आत्मा के रूप और उसके जीवन के विषय में सर्व भौमिक अथवा विज्ञान-मूलक सत्य धर्म के प्रति गूढ़, अमूल्य और परम कल्याणकारी सत्यों और तत्वों की खोज करके मानो मज़हबी दुनिया का सारा तख़ता पलट दिया है। हम इन दोनों विषयों में भगवान देवात्मा के विचार अलग-अलग उनके ही शब्दों में पाठकों की सेवा में उन के लाभ के लिए पेश करते हैं :-

नाना प्रकार के कल्पित वा मिथ्या मत

"विज्ञान-मूलक सत्य धर्म को न जानकर लोगों ने जिन-जिन कल्पना मूलक धर्मों की सृष्टि की है, वह नाना प्रकार के हैं, यथा :-

1) लाखों जन किसी प्रकार के मत वा विश्वास को धर्म समझते हैं, अर्थात् किसी ईश्वर वा ईश्वर के अवतार, किसी देवी-देवता, किसी शिक्षक, पैग़म्बर, प्रभु और गुरु, किसी पुस्तक और मोक्ष विषयक एक वा दूसरी कहानी, द्वैत वा अदैतवाद आदि के मानने वा विश्वास करने का नाम धर्म समझते हैं। अब यह कुछ मानना वा विश्वास करना धर्म नहीं हैं।

2) लाखों जन शारीरिक वेशभूषा को धर्म समझते हैं। यथा शिखा (चोटी) रखना, केश, कंघा, करद, कच्छ, और कड़ा रखना, जटा रखना, अथवा दाढ़ी मूछ आदि कुछ न रखना, भभूत मलना, चंदन लगाना, तिलक लगाना, कंठी, माला, कोपीन, श्वेत, गेरुये, नीले, रेशमी, आदि वस्त्र पहनना, कान फड़वाना, तूंबा रखना, चिमटा रखना, चोला, रोब, क्रास, कमर बन्दर, सेली, खड़ाऊं आदि पहनना इत्यादि। अब यह सब वेशभूषा धर्म नहीं है।

3) लाखों जन तीर्थ स्थानों की यात्रा, वहां पर मूर्तियों वा समाधियों वा कबरों आदि के दर्शन और वास और विशेष-विशेष जलाशयों में स्नान करने और उन के पानी पीने आदि को धर्म समझते हैं। यथा हरिद्वार, कुरुक्षेत्र, प्रयाग, काशी, मथुरा, वृन्दावन, गया, बद्रीनाथ, जगन्नाथ, द्वारिका और रामेश्वर आदि की यात्रा, गङ्गा, नर्व्वदा, सरयू, आदि नादियों में स्नान, गङ्गा जल पान, विविध दरगाहों, मक्का, मदीना, जेरुसेलम आदि की यात्रा, इत्यादि 2। अब यह यात्रा और स्नान आदि धर्म नहीं हैं।

4) लाखों जन योगाभ्यास अर्थात् वायु खैंचने रोकने, "सुरत" के चढ़ाने और विविध प्रकार के आसनों के जमाने आदि की क्रिया को धर्म समझते हैं, परन्तु यह कोई क्रिया **धर्म नहीं है।**

5) लाखों जन किसी स्तोत्र वा पुस्तक आदि के पाठ, भजनों के गान वा कीर्तन, किसी मंत्र वा नाम के जप, किसी मूर्ति आदि पर पानी और फूल

और पत्र आदि चढ़ाने, उस के सन्मुख धूप और दीप जलाने, खाने पीने की कोई वस्तु आगे रखने, कबरों पर फूल और तबाफ़ चढ़ाने, ताज़िया बनाने आदि को धर्म समझते हैं। परन्तु केवल इस प्रकार की कोई क्रिया **धर्म नहीं।**

6) लाखों जन मिथ्या वर्ण वा **कुलभेद** और खान पान विषयक अनुचित छूतछात की रक्षा को धर्म समझते हैं, परन्तु यह **धर्म नहीं।**

7) लाखों जन विशेष-विशेष दिनों में **उपवास** अथवा विशेष-विशेष वस्तुओं के आहार करने का नाम धर्म समझते हैं। जैसे कृष्ण जन्म अष्टमी को निर्जल और निराहार रहना, एकादशी वा मंगलवार आदि के दिन व्रत रखना इत्यादि। यह सब बातें **धर्म नहीं।**

8) लाखों जन एक वा दूसरे **अनुष्ठान** को धर्म समझते हैं, यथा मुराडन, यज्ञोपवीत, रखड़ी, अनन्त, खतना, बपतिस्मा, पौहल, बकरों, भेड़ों, ऊंटों आदि की बलि, वा कुर्बानी, इत्यादि। परन्तु यह **धर्म नहीं।** किन्तु पशुओं की बलि तो पूर्णता: अधर्म है।"

विज्ञान-मूलक धर्म वा देव धर्म

"देव धर्म प्रवर्तक ने मनुष्यात्मा के सम्बन्ध में जिन वैज्ञानिक तत्वों को जाना और प्रकाश किया है, वह यह हैं,

1) जैसे मनुष्य का शरीर भौतिक जगत् के जड़ पदार्थों, अर्थात् आक्सीजन, हाईड्रोजन और कार्बन आदि को लेकर विकसित हुआ है, उसी प्रकार उस का आत्मा उस जीवनी शक्ति से विकसित हुआ है, कि जो भौतिक शक्ति का ही रूपान्तर है। गठन कारी जीवनी शक्ति ने ही भिन्न-भिन्न अवस्था में भिन्न-भिन्न प्रकार के उद्भिद् पशु और मनुष्य आकारों की सृष्टि की है।

2) गठनकारी जीवनी शक्ति ही अनुकूल अवस्था में अपने लिए आकार **गठन** वा **निर्माण** करती है; वही उस का **पालन** करती है; वही उसे **जीवित** रखती है, और वही उसके सद्र्श्य और आकार **उत्पन्न** करती है; और एक से बहुत प्रकार की बन जाती है।

3) गठनकारी जीवनी शक्ति भी अपना उसी प्रकार गठित (Organized) रूप रखती है, जिस प्रकार उसका भौतिक शरीर।

4) जिस प्रकार अनुकूल वा प्रतिकूल सम्बन्धों में पड़कर शरीर बनता वा बिगड़ता है; उसी प्रकार आत्मा भी अपनी विविध शक्तियों में परिवर्तन लाभ करके बनता वा बिगड़ता है। अर्थात् यह दोनों ही नेचर के और सब पदार्थों की न्याई अपने अनुकूल वा प्रतिकूल आवृतकारी सम्बन्धों (Environment) के अनुसार नीच वा उच्च परिवर्तन लाभ करते हैं, और नेचर के विकास वा विनाशकारी अटल नियमों के सर्व्वदा अधीन रहते हैं।

5) जैसे मनुष्य का शरीर प्रति सम्बन्धों में पड़कर रोगी हो जाता है, और रोगी होकर अपने सौन्दर्य और बल को खोता जाता है, और यदि यही सिलसिला बराबर जारी रहे, तो एक दिन वह बिलकुल नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार उस का आत्मा भी प्रतिकूल सम्बन्धों में पड़कर दिनों दिन नीच बनता है, और इस नीचता के अनुसार अपने सौन्दर्य और बल को खोता जाता है, और यदि यही सिलसिला जारी रहे, तो वह भी एक दिन पूर्णात्: नष्ट हो जाता है।

6) जैसे किसी शारीरिक रोग को दूर करने वा उस की पालना के लिए किसी ईश्वर वा देवता

आदि के विश्वास की आवश्यकता नहीं; उसी प्रकार आत्मा को नीच गति वा विनाश से बचाने के लिए उपरोक्त प्रकार के किसी कल्पित विश्वास की आवश्यकता नहीं।

7) जैसे शारीरिक रोग के दूर करने में सुविज्ञ चिकित्सक और औषधि से सहाय मिलती है, उसी प्रकार अधिकारी आत्माओं को अपने जीवन के सम्बन्ध में अज्ञानता, कल्पित विश्वास, मोह और पाप सम्बन्धी नीच गति दायक अवस्था से मोक्ष पाने और उच्च विकास लाभ करने में देव जीवन प्राप्त सत्गुरु से सहाय मिल सकती है।

8) अपनी पतनकारी प्रत्येक नीच गति का ज्ञान और बोध लाभ करके, उस से मोक्ष पाना और उच्च जीवन सम्बन्धी नाना अंगों को विकसित करके, नेचर के प्रत्येक विभाग के साथ अपने लिए विकासकारी सम्बन्ध स्थापन करने के योग्य बनना ही मनुष्य आत्मा का एक मात्र सच्चा और मुख्य लक्ष्य है।

यह सब शिक्षा ऐसे सब स्त्री पुरुषों को दी जाती है, कि जो अपने सच्चे हित की आकांक्षा रखते हों, और अंहकारी और मिथ्या पक्षपाती (मुतास्सब) न हों, और श्रद्धा और दीनता के साथ किसी तत्व को सीखकर उस पर युक्ति पूर्वक विचार कर सकते हों।

हमारी यह हृदय गत कामना है, कि जहां एक ओर अधिक से अधिक संख्या में अपने सच्चे हित के आकांक्षी वा अधिकारी पाठक गण उक्त विज्ञान मूलक सत्यों वा तत्वों का विचार पूर्वक अध्ययन करके आप लाभ उठा सकें, वहां दूसरी ओर इस अमूल्य शिक्षा की रोशनी को अन्य अधिकारी जनों तक पहुँचाकर उसे अपने और दूसरों के लिए सफल बना सकें।

भगवान तुम ने जग में, कारज किया जो जारी,
है उस में काम आना, खुश किस्मती हमारी।

देने को दान हम को नायाब धर्म जीवन,
की है समाज कायम इस जगत में न्यारी।

दुनिया ने काम ऐसा देखा नहीं था अब तक,
सत्य और शुभ पै जिसकी बुनियाद हो उसारी।

इन्सानी आत्मा की रक्षा हो जिस का मकसद,
विज्ञान की बिना पर शिक्षा हो जिसकी सारी।

रिश्तों की बेहतरी का बतलाया जिसने रस्ता,
कर्तव्य पर सिखाई है जिस ने जां निसारी।

है फर्ज यह हमारा फैलाएं ऐसा कारज,
और आएं काम उसमें सब ताकतें हमारी।

भगवान देवात्मा के देव प्रभावों का मनुष्यात्माओं में अनुपम कार्य

1) भगवान देवात्मा क्योंकि देव शक्तियों से विभूषित पूर्ण गठन प्राप्त देवरूप रखते हैं, और देव जीवनधारी हैं, इसलिए वह मनुष्य मात्र का सर्व्वाङ्गों में हित साधन करने की सामर्थ्य रखते हैं, अपूर्ण गठन प्राप्त मनुष्यात्मा अपनी इस निम्न प्रकृति के कारण इस योग्य ही नहीं हैं, कि वह भगवान देवात्मा के देव प्रभावों को पाकर भी सर्व्वाङ्गों में विकास लाभ कर सकें। वह अपनी आत्मिक पूंजी की अवस्था के अनुसार अपना विकास साधन कर सकते हैं, उस से अधिक नहीं। फिर भी एक-एक अधिकारी आत्मा नाना अङ्गों में भगवान देवात्मा के देव प्रभावों को पाकर उन्नति करता और कर सकता है। क्योंकि भगवान देवात्मा सर्व्वाङ्गों में हित साधन करने की सामर्थ्य रखते हैं। इसलिए किसी अधिकारी मनुष्य का एक पहलू में, और किसी दूसरे का दूसरे अङ्ग में और किसी का तीसरे अङ्ग में, इत्यादि-इत्यादि भला होता है। यही कारण है, कि जब देव प्रभाव दायक मंडल में नाना जन वास करने का सौभाग्य पाते हैं, तब उन के भाव प्रकाश से यह साफ प्रगट होता है, कि सब को एक ही प्रकार का लाभ नहीं हुआ, किसी को काम वासना का अधिकार बुरा नज़र आया, किसी को धन अनुराग की गुलामी बुरी मालूम हुई, किसी को मान बड़ाई का अधिकार बुरा लगा, किसी को स्वार्थ बुरा नज़र आया आदि। अब देव प्रभावों का मंडल तो सब के लिए एक ही था, परन्तु भाव प्रकाश अलग-अलग क्यों हो गए? वह इसलिए कि देव प्रभाव तो हमारा सर्व्वाङ्गों में हित साधन करने की सामर्थ्य रखते हैं; यह हमारी आत्मिक पूंजी की कमी है, और हमारे भीतर वह सामर्थ्य नहीं, कि हम सर्व्वाङ्गों में अपना कल्याण साधन कर सकें। मनुष्य अपनी अधूरी प्रकृति से लाचार है, परन्तु वह अपनी अधूरी प्रकृति से भगवान् देवात्मा के कार्य को अधूरा नहीं कर सकता। भगवान देवात्मा के देव प्रभावों का कार्य तो पूर्णाङ्ग हित साधन करने का कार्य है, इस सत्य को हमें बार-बार उपलब्ध करने की आवश्यकता है।

2) चूंकि भगवान् देवात्मा हमारा सर्व्वाङ्गों में हित साधन करने वाले हैं, इसलिए उनके देव प्रभावों से अधिकारी मनुष्यों में नाना प्रकार का उच्च परिवर्तन नज़र आता है। अब यह नाना अङ्गों में भगवान् देवात्मा के देव प्रभावों का जो विचित्र कार्य है, उन सब में एक बात जरूर ऐसी पाई जाती है, जो अत्यन्त विचित्र है, वह बात यह है, कि देव प्रभावों में सांस लेने वाला जन नाना सम्बन्धों में कम हानिकारक और नाना सम्बन्धों में अधिक से अधिक हितकर बनने के मार्ग पर पड़ जाता है। वह अपनत्व से निकल कर कुछ पर की तरफ जाना शुरू करता है, यह बुनियादी तबदीली धर्म मार्ग पर चलने के लिए अत्यन्त आवश्यक है, इस बुनियादी तबदीली से ही अधर्म जीवन का क्रम बन्ध होना शुरू हो सकता है। और धर्म जीवन का क्रम आरम्भ हो सकता है। जहां अपनत्व या स्वार्थ है, वहां पाप है। जहां पर है वहां धर्म है। अब इस पर के सम्बन्ध

में इस निम्न परिवर्तन से भी मनुष्यात्माओं का नाना अङ्गों में कल्याण साधन होता है। इस पर के पथ पर चलने से मनुष्य शिष्टाचारी हो जाता है। और शिष्टाचारी होने से वह अपनी कीमत बढ़ा लेता है। वह उठना बैठना जान लेता है। वह बड़ों के सम्बन्ध में चलना सीख जाता है। उनका प्रणाम का तरीका और अन्य बर्ताव दूसरों पर अच्छा असर डालता है, कई जनों का इतने परिवर्तन से ही बहुत बड़ा भला हुआ है। मेरे सामने की घटना है, कि एक भद्र जन एक देव समाज के माननीय जन को मिलने के लिए आया, उस माननीय जन ने अपने स्वभाव से ही जो उस भद्र जन का स्वागत किया, उस से उस जन पर इस कदर गहरा असर हुआ कि वह उस को वर्षों तक न भूल सका। और जगह-जगह उस का प्रकाश करके तृप्ति पाता रहा। यह भद्र जन और देव समाज के माननीय जन पहले एक दूसरे से वाक़फ़कार नहीं थे; हुआ केवल इतना कि इस माननीय देवसमाजी ने अपनी कुरसी जो अपेक्षाकृत बेहतर थी खाली करके उस भद्र जन को देदी और आप दूसरी कुरसी पर बैठ गए। इस प्रकार एक और स्मर्णीय घटना है, वह यह कि एक पुलिस अफसर एक देव समाज की संस्था में उस के हैड के पास मिलने के लिए गया, उस हैड का उसके सम्बन्ध में जो शिष्टाचार मूलक बर्ताव था, उसका उस अफसर पर इतना गहरा असर हुआ, कि जिस का ब्यान नहीं हो सकता। इस देव समाजी हैड के लिए उस प्रकार के शिष्टाचार का प्रकाश करना बहुत मामूली बात थी, जो देव समाज के कई समासदों में वर्तमान है। देव समाजियों को कई बार पता नहीं लगता, कि इस प्रकार की थोड़ी सी तबदीली से ही हमारा कितना कल्याण साधन होता है। एक अवसर ऐसा आया, कि जब देव समाजी हैड को उस पुलिस अफसर की मदद की जरूरत मालूम हुई, और उस पुलिस अफसर ने अपनी जान पर खेल कर उन की मदद की। मेरे पास कई माता पिता आते हैं, और अपनी सन्तान में शिष्टाचार सम्बन्धी उच्च परिवर्तन को देखकर बार-बार यह प्रकाश करते हैं, कि देव समाज की संस्थाओं में पशुओं को मनुष्य बनाने का काम किया जाता है।

3) इस अपनत्व से निकल कर पर के लिए सेवाकारी होने के परिवर्तन से पारिवारिक सम्बन्धों में जिस प्रकार का मिठास आ जाता है, उस को भी हमें बार-बार स्मरण करने की आवश्यकता है। इस अंग में देव समाज के भीतर सच्चे मोजज़े उत्पन्न होते हैं। यह देव समाज के उच्च मंडल में ही सम्भव था, कि पिता अपने बेटे के चरणों में गिरकर उस से माफी मांगे और अपने पहले किए हुए पाप का परिशोध करे, यह देव समाज के उच्च मंडल में ही सम्भव था, कि एक ससुर अपनी बहू के चरणों में सीस रख कर रोए और माफी मांगे, और अपने पहले के बुरे बर्तावों का परिशोध करे। यह देव समाज के ही उच्च मंडल में सम्भव था, कि एक लड़का अपने ऐसे पिता के सम्बन्ध में रोए और चिल्लाए, कि जिस ने उस की माता और अपने बच्चों को त्याग दिया था, और उस बच्चे के भीतर यह व्याकुलता पैदा हो, कि चाहे मुझे कितनी भी कुर्बानी करनी पड़े, मुझे बिछड़े हुए पिता को अवश्य अपने परिवार के साथ मिलाना है। और वह उन के लिए कई प्रकार की कुर्बानी करे और उस काम में सफलता लाभ करे। यह एक ऐसी करामात है, कि जिस के सामने मेरा सिर झुकता है। साधारण बच्चा ऐसे बाप को घृणा कर सकता है, कि जिस ने परिवार को

त्याग दिया हो और मुफलसी के भंवर में फैंक दिया हो। धन्य हैं भगवान् देवात्मा, जो ऐसी करामातें उत्पन्न करते हैं। यह देव समाज के उच्च मंडल ने ही सम्भव कर दिया है, कि एक-एक घनाढय पति अपनी ऐसी पत्नी के साथ पूर्णता: हमदर्द और वफादार रहे, कि जो सदा बीमार रहती हो और जिस ने अपने पति के घर को अपने बच्चे से आबाद न किया हो, यह भगवान देवात्मा ने ही सम्भव किया है, कि पत्नियों को छोड़कर पति भी यावत्जीवन अपनी पत्नी के साथ वफादार रहें, और उस के जीते जी दूसरी शादी किसी तरह न करें, चाहे हालात कैसे भी हों। भगवान् देवात्मा ने ही तलाक की बुरी और महा हानिकारक प्रथा को सदा के लिए परित्यक्त कर दिया है। बाकी भगवान् देवात्मा ने ही बच्चों को मां बाप का उपकारी रूप दिखाया है, उन के सद्गुण दिखाए हैं; उन की सेवाओं का सुन्दर रूप दिखाया है, जिस का फल यह हुआ है, कि कई देव समाजी परिवार ग़ैर मामूली मिठास से अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

4) भगवान देवात्मा ने अपने कई तुच्छ सेवकों के भीतर ऐसे सद्गुण पैदा किए हैं, कि जिन के कारण ही उन की धन में उन्नति हुई है। उन की पोज़ीशन में उन्नति हुई है। उन की इज्ज़त में उन्नति हुई है, आदि-आदि।

स्थूल देह त्यागी सरदार साहिब श्रीमान सावन सिंह जी के जीवन की कथा स्मर्गीय है, वह एक मामूली पटवारी थे, वह केवल भगवान देवात्मा के देव प्रभावों से लाभ किए हुए उच्च परिवर्तन के कारण ही असाधारण रूप से कीमती वजूद बन गए। पंजाब सूबा के गवर्नर साहिब ने सरदार साहिब के साथ अपना जुटा फोटो क्यों खिचवाया, वह इसलिए कि वह उनके उच्च चरित्र से बहुत प्रभावित हुए थे। और उन्होंने ने ही यह लिखा था, कि भारत भर में मुझे ऐसा इमानदार जन नहीं मिला। और जहां-जहां भी तहसीलदार रहे वहां-वहां के रहने वालों ने उन को "फरिश्ता तहसीलदार" के नाम से पुकारा। अंग्रेज़ अफसर तो उन पर इतने मोहित थे, कि वह अपनी कलम से लिख गए हैं, कि सरदार साहिब ने क्या गवर्नमेन्ट और क्या प्रजा दोनों पर बहुत बड़े उपकार किए हैं। और उनका पेन्शन पर जाना क्या गवर्नमेंट और क्या प्रजा दोनों के लिए घाटे की चीज़ है। गवर्नमेन्ट की तरफ से उन्हें जागीर अता की गई। उन को मुरब्बे अता किए गए, दो नम्बरदारियां दी गई। यह सब कुछ देने के बाद भी उन के अफसर तृप्त नहीं हुए। वह यही चाहते थे, कि ऐसा फरिश्ता बहुत बड़े इनामों का अधिकारी है।

मेरे परलोक वासी भाई श्रीमान सुगना मल जी कनल के साथ भी भगवान देवात्मा की कृपा से उन के अंग्रेज अफसरों ने बहुत अच्छा बर्ताव किया। वह 35 रूपये माहवार के कर्लक कोयटा में नियत हुए थे। भगवान देवात्मा के देव प्रभावों से उन में जो शिष्टाचार और सदाचार के भाव पैदा हुए थे, उन की बदौलत उन्होंने बहुत जल्द उन्नति लाभ की और तीन वर्ष में ही 35 रूपये से 100 रूपये वेतन पर उन्नत किए गए। और एक सैक्शन के हैड बनाए गए। वह खुद मैट्रिक थे, लेकिन उनके अधीन कई ग्रेजुएट थे। मैंने जब अपना जीवन भगवान देवात्मा के कार्य में अर्पण किया और मैं सिन्ध से पंजाब आ गया, तो उन्होंने भी छलांग मारी। 100 रूपए की नौकरी छोड़कर वह 50 रूपये पर देव समाज में काम करने के लिए चले

आए। उस के बाद जो स्वर्णीय घटना हुई वह यह है, कि गवर्नमेंट की तरफ से एक सूचना प्रकाशित हुई, कि जिस महकमा में श्रीमान सुगना मल जी काम करते थे, उस में काम करने वालों को कुछ खास इनाम मिलेगा, वह इनाम उन दिनों के काम के लिए था, जिन दिनों श्रीमान सुगना मल जी वहां काम करते थे। श्रीमान सुगना मल जी ने अपने बड़े अंग्रेज अफसर को दरख्वास्त दी कि मैं नौकरी तो छोड़ चुका हूं, लेकिन मैं इनाम का अधिकारी हूं। इस अफसर ने श्रीमान सुगना मल जी को प्यार भरा पत्र लिखा, कि मैं तुम्हें इनाम भेज रहा हूं, और यह भी लिखा, कि तुम्हारे लिए यदि सम्भव हो, कि तुम फिर नौकरी पर आ जाओ, तो मैं तुम्हें अच्छी तनख्वाह दिला दूंगा। उसके अधीन सैकड़ों आदमी काम करते थे, उसका दिल श्रीमान सुगना मल जी की तरफ क्यों आकृष्ट हुआ, इसलिए कि भगवान देवात्मा के देव प्रभावों ने उन के हृदय में जो महकदार भाव उत्पन्न किए थे, उनकी की खुशबू से उन की कीमत बढ़ गई थी।

इसी प्रकार श्रीमान बालकृष्ण जी फरलिया का दृष्टान्त है, उन के पाए हुए गुणों का उन के अंग्रेज अफसरों और उनके साथियों पर इतना असर है, कि सब उन को एक खास हस्ती समझते हैं, और बड़े-बड़े अंग्रेज अफसर जिन के साया से और डरते हैं, उन के पास श्रीमान फरलिया न केवल बेधड़क चले जाते हैं, बल्कि सन्मान पाते हैं। भगवान देवात्मा के देव प्रभावों का कैसा अनोखा और विचित्र कार्य और हम लोगों पर भगवान देवात्मा का कितना महा उपकार!!।

5) भगवान देवात्मा के देव प्रभाव जो विश्वास का जीवन पैदा कर देते हैं, उस के कारण हमारा बहुत बड़ा भला होता है, लाखों रुपए रखकर एक-एक घनाढय की इतनी कीमत नहीं बढ़ती, कि जितनी कीमत भगवान देवात्मा के एक-एक सेवक की बढ़ जाती है, जब उसका जीवन विश्वास का पात्र बन जाता है। एक-एक साधारण जन भगवान देवात्मा के इस दान को पाकर हज़ारों दिलों में जगह लाभ कर लेता है। यह एक विचित्र लीला है। श्रीमान लाला हरीदास जी बी. ए. फीरोज़पुर में देव समाज गर्लज़ हाई स्कूल के हैड मास्टर हैं, यह सच है कि वह बहुत मेहनती हैं, लेकिन मेहनती जन दुनिया में और भी बहुत मिलते हैं, यह सच है कि वह यूनीवरस्टी परीक्षाओं में अच्छे नतीजे पैदा कर देते हैं, परन्तु इस प्रकार के और भी हैड मास्टर हैं, जो अपने स्कूलों में सौ फ़ी सदी फल पैदा करते हैं, परन्तु श्रीमान हरीदास जी भगवान देवात्मा के देव प्रभावों से एक ऐसी विशेषता के मालिक हो गए हैं, जो दुनिया में दुर्लभ है। वह लड़कियों और स्त्रियों के सम्बन्ध में बहुत बड़े विश्वास के पात्र बन गए हैं। इसलिए बड़े-बड़े फ़ौजी अफसर भी अपनी नौजवान कन्याओं को उनके पास सुरक्षित समझकर उनके घुटनों को हाथ लगा कर प्रणाम करते हैं।

स्थूल देह त्यागी श्रीमान मास्टर खान चन्द जी इस अङ्ग में हज़ारों दिलों पर अपना सिक्का जमा गए हैं। वह जिस प्रकार की पवित्रता को लाभ कर चुके थे, उसका ही यह फल है, कि उनकी बरसी हर साल बाहर के लोग बहुत सन्मान् भाव से मनाते हैं, और उन की महिमा गाते नहीं थकते।

6) भगवान देवात्मा के देव प्रभावों से प्रभावित हो कर कई जन इस योग्य बन गए हैं, कि जो धन के बड़े-बड़े त्याग करते हैं। श्रीमान सेठ नानू मल जी ने पूजनीय भगवान देव प्रभावों से 50000

रूपए का दान किया था, श्रीमान डाक्टर श्री राम जी ने अपने स्वार्थ से निकल कर अपना सारा नकद रुपया जिस की संख्या हज़ारों तक जाती है, पूरे उत्साह के साथ दान दे दिया और उसके बाद उन के दान का क्रम चला ही चलता है, श्रीमान मेवा सिंह जी ने कि जो देव समाज के कर्मचारी हैं, अपनी सारी नकद पूंजी की जिस की संख्या हज़ारों तक की है, बहुत बड़े उत्साह और उच्च भावों के साथ दान कर दी। पिछले साल महोत्सव के अवसर पर भगवान देवात्मा की आने वाली शताब्दी के उपलक्ष्य में कई सेवकों ने आठ साल तक एक मास की आमदनी प्रति वर्ष देने की प्रतिज्ञा की है, जो दृश्य इस स्वार्थ परायण देश के लिए एक असाधारण दृश्य है। भगवान देवात्मा के देव प्रभाव मनुष्य को पर सेवा में ही सुख पाने वाला बना देते हैं।

7) भगवान देवात्मा के देव प्रभावों में पलकर कई जन अच्छे एडीटर बन गए और कई अच्छे लैक्चरार बन गए और वह साहित्य के द्वारा बहुत बड़े सेवाकारी बनते रहे हैं। 'सेवक' और 'विज्ञान-मूलक धर्म' को छोड़कर जिन के इंचार्ज देव समाज के कर्मचारी हैं। 'सत्य देव सम्वाद' के असिस्टेन्ट एडीटर श्रीमान कपूरचन्द जी रहे, यह केवल मैट्रिक पास थे। परन्तु भगवान देवात्मा के देव प्रभावों को पाकर वह दिनों दिल लेख लिखने की इस प्रकार की योग्यता पाते जाते हैं, जिस से बड़े-बड़े बी. ए. और एम. ए. वंचित हैं। श्रीमान कपूर चंद जी का कैसा सौभाग्य! कर्मचारियों में श्रीमान अमर सिंह जी जो मिडल पास करके भगवान देवात्मा के श्री चरणों में आए थे, एक बहुत बड़े पाए के लेखक बन गए। कई कर्मचारियों और सेवकों के जो उर्दू में जीवन चरित्र वर्तमान हैं, उन में से बहुत बड़ी संख्या के वही लेखक हैं। और वह वर्षो तक एडीटर रहे हैं। मुझ तुच्छ पर भी इस पहलू में बहुत बड़ा उपकार हुआ है, जिस का मैं शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता। कई छोटे मोटे पम्फलिट छोड़कर मैं प्राय: 17 वर्ष से 'विज्ञान मूलक धर्म' का एडीटर हूं। और पूजनीय भगवान का अंग्रेजी में जीवन चरित लिखने का अधिकार पा चुका हूं, जो प्राय: 700 पृष्ट का बड़ा ग्रंथ है। और उर्दू हिन्दी और अंग्रेजी में सैकड़ों लेख लिखने का अधिकार पा चुका हूं। और मैं अपने सामने भगवान देवात्मा की ज्योति में इतना खुला हुआ वसीह मैदान देखता हूं, कि मैं यह अनुभव करता हूं, कि इस ज्योति में रहते हुए मैं हज़ारों लेख लिख सकता हूं। और जो सब भगवान देवात्मा के देवरूप और उन की शिक्षा की महिमा के विषय में हों। मेरे साथ पढ़े हुए कालेज के ग्रेजुएट में से एक भी ऐसा जन मालूम नहीं होता, कि जिस के जीवन से इतना काम निकला हो।

8) भगवान देवात्मा के देव प्रभावों को पाकर श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज ने अच्छी नौकरी और आगे की बहुत चमकदार उम्मीदों को लात मार कर भगवान देवात्मा के जीवन व्रत की सिद्धि में काम करने के लिए अपना सारा जीवन भेंट कर दिया। उस समय वह नौजवान थे, और उन्हों ने सारी उमर भगवान देवात्मा के जीवन व्रत की सिद्धि के कार्य में सफल की। श्रीमान भाई मोहन देवी जी 130 रूपए की नौकरी को छोड़कर अपनी जन्म भूमि और मित्रों को त्याग करके 26 वर्ष की भरी जवानी में भगवान देवात्मा के कार्य में लग गए, वह प्राय:

बाकी पृष्ठ 2 पर

WPP - Regd. Postal No.Pb (0078) 2006 **Published on 5th of the month**
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

महोत्सव के कार्यक्रम

परम पू० भगवान देवात्मा संस्थापक देवधर्म का 157 वां वार्षिक शुभ जन्म महोत्सव धर्मशाला 18 डी चण्डीगढ़ में 22 दिसम्बर, 2007 से 25 दिसम्बर, 2007 तक मनाया जा रहा है। इस शुभ अवसर पर पहुंच कर अधिक से अधिक लाभ उठाएं।

महोत्सव के कार्यक्रम

शनिवार 22 दिसम्बर, 2007

प्रवेश सभा 4.00 बजे सायं

रविवार (इतवार) 23 दिसम्बर 2007

1. **पहली सभा 8.30 बजे प्रातः**

विषय : परम पूज्यनीय भगवान देवात्मा का परम आवश्यक जीवनदायक सम्बंध

2. **पब्लिक लैक्चर 4.00 बजे**

वक्ता – प्रिंसीपल मिसिज सुरजीत बराड़

सोमवार 24 दिसम्बर 2007
(महोत्सव का विशेष दिन)

सूर्य निकलने के समय जो कि आत्मिक जगत के सूर्य परम पूजनीय भगवान देवात्मा के शुभ जन्म का समय है, बैंड, बाजा, कीर्तन, शुभकामनाएं और जय ध्वनि – 6.30 बजे प्रातः

1. **पहली सभा 8.00 बजे प्रातः**

विषय : भगवान देवात्मा का परम लक्ष्य, उसकी सिद्धि के लिए उनका तप, उसके सम्बंध में हमारी ओर से कुर्बानियों की आवश्यकता, धन और जन की अपील।

2. **दूसरी सभा 1.00 बजे दोपहर,**

विषय : बच्चों की सभा और संगीत सभा।

3. **पब्लिक लैकचर 4.00 बजे सायं,**

वक्ता – डॉ विनोद जी खेड़ा

4. दीप माला 6.00 बजे सायं

5. आलोचना सम्बन्धी सुझाव
(लिखकर दे सकते हैं)

मंगलवार 25 दिसम्बर, 2007

1. **पहली सभा 8.00 बजे प्रातः**

विषय : सेवक, सेविकाओं का ग्रहण, श्रेणियों में उन्नति तथा पारिवारिक अनुष्ठान

2. भाव प्रकाश

3. देव आरती का गान और जय ध्वनि

नोट : 1. कृप्या सेवक सेविका अपनी एकाकारियों के साथ शामिल हों।

2. आवश्यकता पड़ने पर किसी कार्यक्रम में परिवर्तन किया जा सकता है।

3. यात्रीगण कृपया अपने बिस्तरे अवश्य साथ लाएं।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री–देव–धर्म–मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh - 160022*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21–डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts